www.xtrapapers.com

M15/2/ABHIN/HP1/HIN/TZ0/XX/T

Diploma Programme
Programme du diplôme
Programa del Diploma

Hindi B – Higher level – Paper 1
Hindi B – Niveau supérieur – Épreuve 1
Hindi B – Nivel superior – Prueba 1

Friday 8 May 2015 (afternoon)
Vendredi 8 mai 2015 (après-midi)
Viernes 8 de mayo de 2015 (tarde)

1 h 30 m

Text booklet – Instructions to candidates

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for paper 1.
- Answer the questions in the question and answer booklet provided.

Livret de textes – Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

Cuaderno de textos – Instrucciones para los alumnos

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

2215 – 2256

7 pages/páginas

© International Baccalaureate Organization 2015

www.xtrapapers.com

पाठांश क

संगोष्ठी

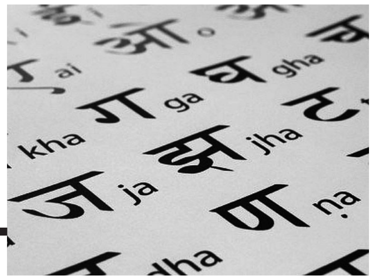

अप्रवासी भारतीय हिन्दी के उत्थान में क्या योगदान दे सकते हैं?
हिन्दी भाषा को अपना कर और इसका सम्मान करके अप्रवासी भारतीय विशिष्ट योगदान दे सकते हैं।

प्रतिक्रिया 1
पर्व-त्योहार पर हिंदी में और भारतीय संस्कार के विषय पर बात कर वे महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

प्रतिक्रिया 2
ये सत्य है कि हमे हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए पर देश से बाहर अंग्रेजी या अन्य भाषाओं का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है क्योंकि ये भाषाएं हमारे व्यवसाय से जुड़ी होती हैं। मैं समझता हूँ कि अप्रवासी भारतीयों को हिंदी भाषा के प्रौद्योगिक प्रारूप का भी विकास कर एक सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

प्रतिक्रिया 3
मैं उपर्युक्त विचार से सहमत हूँ। अप्रवासी भारतीय भारत के सांस्कृतिक राजदूत हैं। वे हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हिंदी के साहित्य का प्रचार करें, हिंदी शिक्षण की व्यवस्था करें और हिंदी के प्रयोग को अपना कर्तव्य समझें। सामाजिक अवसर पर हिंदी की किताबें ही भेंट में दें।

प्रतिक्रिया 4
हिंदी के उत्थाान में अप्रवासी हो या स्थानीय, केवल अत्यधिक प्रयोग ही लाभप्रद हो सकता है। वस्तुतः अप्रवासी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जैसी संस्थाओं के लिये कार्य करें व उन्हें संसाधन उपलब्ध कराने में सहयोग करें। वे नवोदित लेखक व निबंधकारों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। सब से बड़ा योगदान तो यह होगा कि विकीपीडिया में अपना अंशदान करें और हिंदी के विश्वव्यापी स्वरुप को मजबूत करें। अनुवाद कार्य में भी उनका योगदान सराहनीय होगा। पिछले विश्व हिंदी सम्मेलन में लिए गए संकल्प व निर्णय को अमल करने में अप्रवासी भारतीयों का सहयोग हिंदी का पथ बहुत प्रशस्त कर सकता है।

प्रतिक्रिया 5
नेट पर हिन्दी भाषा को अप्रवासी समृद्ध कर रहे हैं। मैं एक अप्रवासी होने के नाते इतना जानता हूँ कि हिन्दी ही हमारी पहचान है और इसके प्रयोग में ही इसका विकास है।

प्रतिक्रिया 6
कभी कनाडा आइए और देखिए किस तरह से पंजाबी को द्वितीय भाषा का स्तर प्रदान करवाने में पंजाबी समुदाय के लोग प्रयत्नशील रहे हैं।

प्रतिक्रिया 7
हिन्दी के उत्थान के लिए हमें इसे बोलने में गर्व होना चाहिए। अप्रवासी भारतीयों का हिन्दी के उत्थान में योगदान देने से अधिक महत्वपूर्ण है प्रवासी भारतीयों के घर परिवेश में हिन्दी के सतत उपयोग की।

हरीश कुमार http://discussion.webdunia.com (16 जुलाई 2007) (रूपान्तरित)

www.xtrapapers.com

पाठांश ख

कठपुतलियों का इतिहास

कठपुतलियों के नाच को देखने के लिए अक्सर उमड़ने वाली दर्शकों की भारी भीड़ इस बात की साक्षी है कि यदि कला लोगों से सीधा संपर्क करती है, तो वह कभी मर नहीं सकती। आज भी कठपुतलियों के नाटकीय कथानकों के माध्यम से समाज की समस्याओं को उभारने और लोगों को जागरूक बनाने की प्रेरणा दी जा रही है। कठपुतली के साथ लोक संस्कृति ही नहीं, कथा-कहानियों और नाटकों की बहुरंगी दुनिया जुड़ी है। सदियों से कठपुतली का प्रदर्शन लोक संस्कृति से जुड़े मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम रहा है। विशेषकर राजा-महाराजाओं द्वारा इस कला ने अधिक प्रोत्साहन प्राप्त किया। जहाँ लोगों को अपने गौरवमय इतिहास की झलक देखने को मिलती है, वहीं खासा मनोरंजन भी होता है।

भारतीय कठपुतलियों की विदेशों में मांग बढ़ रही है और विदेशी पर्यटक इन्हें खरीदकर अपने साथ ले जाते हैं। आड़ू की हल्के वज़न की लकड़ी को मानवाकृतियों में काट-छाँटकर बनाई जाने वाली इन पुतलियों के चेहरे पर चटख रंगों से मुँह, नाक, कान और आँखों की रेखाएं बनाते हैं। बदलते वक्त के साथ अब यह कला भी पूरी तरह व्यावसायिकता के रंगों में रंग गई है। कठपुतली नृत्य का प्रदर्शन अब गांव की चौपालों पर नहीं, बल्कि संग्रहालयों, कला मेलों और पांच सितारा होटलों में भी होने लगा है। आजकल साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा जैसे विषयों को भी कठपुतलियों के ज़रिए रोचक ढंग से पेश किया जाता है।

राजस्थान की भूमि कठपुतलियों की जन्मस्थली रही है। यहाँ इसकी दो हज़ार वर्ष पुरानी परंपरा पाई जाती है। राजस्थानी पुतलीकार इन पुतलियों को अन्य ग्रह का निवासी बताते हैं। उनकी मान्यता है कि लोगों का मनोरंजन करने के लिए ही इन कठपुतलियों ने मनुष्य रूप धारण किया है। इसी कारण वे ज़मीन पर नहीं चलती हैं। ये पक्षियों की तरह उड़ती हैं और वह भी बिना परों के। इंसानी चरित्र को यह कला सजीव करती है, जिसे कहानी के अनुरूप ढाला जा सकता है। रंगमंच सर्वदा मनोरंजन का सराहनीय साधन रहा है। उंगली के इशारे से नाचने वाली कठपुतली को इसका सबसे पुराना रूप माना जा सकता है। डोर में खिंची हैं तो प्रदर्शन कर रही हैं, इसे ढीला छोड़ दिया तो कठपुतली जिस हाल में हैं, बस वैसे ही थम जाती हैं। असली अभिनेता तो पुतलीकार है जो इसे नचा रहा है। वह जो प्रदर्शन करना चाहता है, कठपुतली के माध्यम से कर रहा है। तभी तो इसे “कठपुतली का खेल” या “कठपुतली का तमाशा” कहा जाता है।

लुबना अली, *नंदन* (सितंबर 2009) (रूपान्तरित)

www.xtrapapers.com

पाठांश ग

ऊर्जा संकट

ऊर्जा किसी देश के विकास के यंत्र का ईंधन है। प्रति व्यक्ति औसत ऊर्जा खपत वहाँ के जीवन स्तर की सूचक होती है। अपना भविष्य उज्जवल बनाए रखने के लिए वर्तमान परिस्थितियों में सभी तरह की ऊर्जाओं तथा इंधन की बचत अत्यंत ही आवश्यक है। आवश्यकतानुसार आज विद्युत की आपूर्ति में कमी से भारनियमन (लोडशेडिंग) होना एक आम बात हो गई है। पेट्रोलियम पदार्थों की निरंतर बढ़ती हुई मांग तथा नित नई बढ़ती हुई कीमतें और पेट्रोल पंपों में बार-बार पेट्रोल समाप्त का बोर्ड दिखाई देना भविष्य में आने वाली समस्याओं का संकेत है। आवश्कता है कि देश का प्रत्येक नागरिक इस दिशा में जागरूक हो तथा हर संभव ऊर्जा बचत करे तथा औरों को भी इसका महत्व बताए। ऊर्जा के विभिन्न रूपों ने हमारी जीवन शैली में अनिवार्य स्थान बना लिया है। इस सब में भी बिजली ही ऊर्जा का वह प्रकार है जो सबसे सुगमता से, हर कहीं सदैव हमारी सुविधा हेतु सुलभ है। यही कारण है कि अन्य ऊर्जा विकल्पों को बिजली में बदलकर ही उपभोग किया जाता है। पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन निश्चित हैं जिन्हें भौतिक सुख साधनों में बदलकर उससे विकसित होने का सपना देखा जा रहा है।

प्रकृति पर जितना अधिकार हमारा है उतना ही हमारी भावी पीढ़ी का भी। जब हम अपने पूर्वजों के लगाए वृक्षों के फल खाते हैं, उनकी संचित धरोहर का उपभोग करते हैं तो हमारा नैतिक दायित्व है कि हम भविष्य के लिए भी नैसर्गिक संसाधन सुरक्षित छोड़ जाएं। नियमित व संतुलित दिनचर्या छोड़कर हम नया प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। उस दृष्टि से अगली प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में हमें ऊर्जा उत्पादन को लगभग दुगना करते जाना होगा। आज आवश्यकता है बिजली और ऊर्जा की बचत के चिंतन की। तो क्यों न आज से ही हम अपने व्यक्तिगत जीवन में व अपने परिवेश में ऊर्जा की बचत करें। बचत के महान संकल्प को लेकर एक नवचिंतन को क्रियान्वित करने की शुभ शुरुआत करें। ऊर्जा संरक्षण, बिजली का मितव्ययी उपयोग, समय की मांग है जिसे हमें स्वीकार करना ही होगा।

बी.ई.ई का तारांकित मूल्यांकन (स्टार रेटिंग) कार्यक्रम ऊर्जा बचाने का एक प्रमुख कार्यक्रम है। वर्ष 2006 में शुरू तारांकित मूल्यांकन कार्यक्रम के अंतर्गत एक से पांच तक “तारों” के निशान दिए जाते हैं। उपकरणों पर जितने अधिक “तारे” होगें, वह उतनी ही कम बिजली व्यय करता है। ऐसे में इस योजना से वे यह जान सकेंगे कि कौन सा वाहन कितने ईंधन का उपयोग करेगा और वे बेहतर विकल्प का चयन कर सकेंगे। बी.ई.ई के अनुसार 2011 का वर्गीकरण कार्यक्रम 2009–10 वर्ष अवधि में बिकी कारों में ईंधन उपयोग के आंकड़ों पर आधारित था और यह 2014–15 वर्ष अवधि तक लागू होगा। 2013–14 के आंकड़ों के आधार पर इसे 2014–15 में फिर से नया रूप दिया जाएगा जो 2015–16 से 2018–19 वर्ष अवधि तक लागू होगा। बिजली मंत्रालय का अनुमान है कि ऊर्जा संरक्षण के विभिन्न उपायों से कुल बिजली उत्पादन क्षमता 25000 मेगावाट की वृद्धि की जा सकती है।

शशांक द्विवेदी, www.vigyanpedia.com (6 मई 2012) (रूपान्तरित)

www.xtrapapers.com

पाठांश घ

स्वाभिमानी

बरामदे में बैठे-बैठे वे विचारों के समुद्र में गोते लगा रहे थे। कभी सामने रोशनदान के ऊपर बैठे नर व मादा पक्षी को देखते तो कभी अतीत के आत्मीय क्षणों को पकड़ने की कोशिश करते, किंतु बार-बार फिसल जाते थे। रोशनदान में लगे घोंसले के भीतर पक्षी के बच्चे चिल्ला रहे थे। एक समय वे भी अपने बच्चों के लिए सारी सुविधाएँ जुटाने में वे कभी हिचकते नहीं थे। पक्षी-शावकों के चिल्लाने की आवाज़ से उनके सोचने का सिलसिला टूट गया। उन्होंने देखा नर-पक्षी परेशान मुद्रा में रोशनदान पर बैठा हुआ था। बच्चों की परेशानी से उसके भीतर तूफ़ान उठा हुआ था। वह उड़कर बाहर जाता और थोड़ी देर में लौट आता। फिर बाहर जाता और खाली लौटता। लगता था पूरी भोजन-सामग्री नहीं मिल पाने के कारण बच्चे शोर मचा रहे थे। उन्हें भी तो बच्चों की थोड़ी-सी परेशानी बेचैन कर देती थी। परेशान पक्षी को देखकर उन्हें सहानुभूति हो आई। उन्होंने पत्नी को आवाज दी, “सुनती हो! ज़रा बाहर तो आना।”

पत्नी के बाहर आने पर रोशनदान की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, “देखो ना! पक्षी बहुत परेशान है। लगता है बाहर खाने-पीने की चीज़ें नहीं मिल पा रही हैं। इसके चलते उसके बच्चे भूख से शोर मचा रहे हैं। कुछ दाने हों तो नीचे बिखेर दो।”
“बेकार परेशान हो रहा है। परिपक्व होते ही बच्चे फुर्र से उड़ जाएँगे और यह पक्षी बेचारा फिर अकेला रह जाएगा।”

पत्नी की बातों ने उन्हें विचलित कर दिया था। आज उनकी स्थिति भी तो वैसी ही है। बच्चे अपने परिवार के साथ व्यस्त हैं। उनकी खोज-ख़बर लेने वाला कोई नहीं है।
“चाय पकड़िए!” पत्नी ने बगल में बैठते हुए कहा और कटोरी में रखे चावल के दानों को फ़र्श पर बिखेर दिया। परेशान पक्षी के मोह में अपनी झलक दिखाई दी। दोनों पति-पत्नी बैठे-बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे कि पक्षी उतरेगा। फ़र्श पर छितराए दानों को चुनेगा और बच्चों को खिलाएगा, किंतु वह नीचे नहीं उतरा। पक्षी ने एकबार उनकी तरफ़ देखा। लगा जैसे वह कुछ कहना चाह रहा है। फ़र्श पर छितराए दानों को चुपचाप देखता रहा। उन्होंने बहुत प्रयास किया कि वह नीचे उतरे और दाना चुगकर बच्चों को खिलाए, किंतु पक्षी रोशनदान से निकल कर बाहर जा चुका था।

कृष्णानंद कृष्ण, *अभिव्यक्ति* (1 अप्रैल 2007) (रूपान्तरित)

www.xtrapapers.com

पाठांश ङ

मोबाइल की दुनिया के प्रमुख चलन

आशा है कि भारत चीन के बाद दूसरे सबसे बड़े स्मार्टफ़ोन बाज़ार के समान उभरकर आएगा। 70 करोड़ सक्रिय मोबाइल फ़ोन ग्राहकों के साथ भारत का यह मोबाइल मुद्रा बाज़ार दुनियाभर में हर जगह अपनी पहचान स्थापित कर सकता है।

[– X –]
ऑनलाइन बाज़ार के फैलाव के साथ ई-कॉमर्स के व्यक्तिगत होने की संभावना बढ़ गई है। अनेक प्रख्यात वेबसाइट्स ने ग्राहकों को अपनी खरीददारी को व्यक्तिगत बनाने के अवसर उपलब्ध कराए हैं। इसके बाद ये साइटें पूरे विश्वव्यापी वेब से बेहतरीन विकल्पों को उपलब्ध करा सकती हैं। यह प्रक्रिया स्वाचालित हो सकती है।

[– 49 –]
जो उपकरण आप पहन सकते हैं और जो पूरी तरह इंटरनेट से जुड़ी रहती हैं, वो आपकी गतिशीलता को नया विस्तार दे सकती हैं। ऐसे उपकरण साल 2014 में मुख्यधारा के उपकरण बन जाएंगे और उनकी आपूर्ति पिछले साल के 10 करोड़ की तुलना में दोगुनी होने की आशा है। इसका मतलब यह है कि आपकी कार, घड़ी, जूते और यहां तक कि कपड़े तक संगत (कनेक्टेड) हो सकते हैं।

[– 50 –]
जैसे-जैसे कंपनियां और लोग उपकरणों से आगे बढ़ेंगे, वे क्लाउड की तरफ़ जाएंगे। ज़्यादातर आँकड़े ग्राहक चलते-फिरते प्राप्त कर पाएंगे, चाहे उनका उपकरण कोई भी क्यों न हो। कोई भी उपकरण पहला केंद्रबिंदु नहीं होगा इसके बजाय, निजी क्लाउड यह भूमिका निभाएगा।

[– 51 –]
बैंकों और मोबाइल कंपनियों की तैयारी के बाद, आर.बी.आई* के हस्तक्षेप से मोबाइल के माध्यम से छोटे-छोटे लेन-देन बढ़ाए जा सकेंगे। आर.बी.आई चाहता है कि टेलीकॉम ऑपरेटर बैंकों के साथ मिलकर मोबाइल निजी सेवा आरंभ करें। टेलीकॉम कंपनियां मोबाइल के माध्यम से ख़रीद पर एक सेवा-शुल्क लगाना चाहती थीं और सामान की विक्रय से मिले राजस्व में भागीदारी चाहती थीं। इस सिलसिले में सभी दलों के हितों को लेकर नियामक कार्यवाही के माध्यम से मोबाइल लेन-देन को बढ़ाया जा सकता है।

www.xtrapapers.com

[– 52 –]
एक दूसरे से बात करने वाले मनुष्यों की अपेक्षा एक दूसरे से बात करने वाली मशीनें ज़्यादा कार्यकुशल होती हैं। उदाहरण के लिए, एक दूसरे से बात करके मशीनें ई-कॉमर्स ज़्यादा व्यक्तिगत बनाने में मददगार हो सकती हैं। कई औद्योगिक प्रक्रियाएँ स्वाचालित हो सकेंगी और इतनी दक्षता बढ़ा देंगी जो उद्योगों में अब तक नहीं देखी गई थी। मोबाइल से मोबाइल संवाद को बढ़ाने की दिशा में हालांकि आंकड़ों की सुरक्षा का आश्वासन एक मुख्य समस्या होगी जिसका समाधान ढूंढना आवश्यक होगा।

[– 53 –]
क्या ऐसी दुनिया हो सकती है जहां आपके आंकड़े या जानकारी सुरक्षित हो? यानी प्राइवेसी की समस्या और गंभीर रूप ग्रहण कर सकती है। जैसे-जैसे आप मोबाइल पर अधिक समय बिताना शुरू करेंगे और ऐप्स को आपकी स्थिति, चुनाव, संपर्क और संदेश पाना आसान होता जाएगा, यह शायद इस वर्ष की अपेक्षा अगले वर्ष एक बड़ा प्रश्न बनकर उभरेगा।

हालांकि ये बदलाव आपका ध्यान खींच सकते हैं और आपकी जेब का कुछ अंश पाने की स्पर्धा कर सकते हैं। ऐसे में यह देखना रोचक होगा कि राजनीतिक दल चुनाव से पहले मोबाइल का इस्तेमाल कैसे करते हैं। सभी पार्टियां अब आपको अपने एक विशिष्ट नंबर पर “मिस कॉल” देकर स्वयंसेवक बनने को कह रही हैं। अधिक समझदारी भरे अभियान और विशेषतः “सोशल मीडिया” पर वायरल होने योग्य वीडियो का प्रयोग इस दिशा में एक गूंज पैदा करेंगे जो अभी तक किसी चुनाव में नहीं देखी गई है। अगर कोई एक ऐसा चलन है, जो इस वर्ष मोबाइल के लिए समरूप रहेगा, तो वह केवल पैमाना है जिस पर चीज़ें घटित हो सकती हैं।

आशुतोष सिन्हा, बीबीसी हिन्दी (21 जनवरी 2014) (रूपान्तरित)

* आर.बी.आई: रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया